कष्टों में भी हौसला नहीं हारी

यह कहानी 13 वर्षीय किरन रावत की है जो नवीं कक्षा में पढ़ती और इनका गॉव उज्याड़ी है। इनकी बाल पंचायत का नाम प्रतिभा बाल पंचायत है। इस छोटी सी लड़की ने अपने गॉव की समस्याओं को जाना और पहचाना।

गवाडस्यू घाटी के गोद में बसा उज्याडी गॉव में 267 परिवारों में से एक परिवार रमेश सिंह का है। जो कि गरीबी की हालत में अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

रमेश शराबी था। रमेश का परिवार उसकी इन हरकतों से परेशान रहते थे।

रमेश की ये रोजमरा की आदत बन गयी थी। एक दिन रमेश शराब पीकर बेहोश हुआ था तभी उससे परेशान मोहन (काल्पनिक नाम) ने मौके का वार पाकर रमेश को मार दिया। रमेश की मृत्यु के बाद उसका परिवार और कष्टों में पड़ गया परन्तु रमेश की पत्नी ने हिम्मत नहीं हारी और दूध बेच कर अपने बच्चों को पढ़ाया लिखाया और आज रमेश के बच्चे अपने जीवन को खुशी खुशाल से गुजार रहे हैं।

उमंग के बढ़ते कदम

25 सितम्बर 2005 का दिन पहाड़ के 30 बच्चों को बड़ा यादगार साबित हुआ। जिसमें विभिन्न गॉव के बच्चों ने अपने अधिकारों और अपने क्षेत्र की समस्याओं व उनकी उपलब्धियों को अपनी लेखनी बनाकर मीडिया के माध्यम से अपनी बात को रखने में सफलता हासिल की।

उमंग की शुरुवात अमेंजिग किडस से शुरु हई जिसका तात्पर्य है अद्भूत बच्चे (बच्चे के द्वारा कुछ नया कार्य जो समाज के लिए शिक्षा प्रद हो) है। ये बच्चे 8 वर्ष से 18 वर्ष के 30 बच्चे थे। इनमें 10 युथ नरेन्द्र पंवार, दीपा झिंक्वाण, लक्ष्मी पॅवार, उमा ढ़ौडियाल, पदमा रावत, पूनम रावत, दीपक साह, गबर रावत, लक्ष्मी नौटियाल, दीपक रावत और 20 बच्चे जगदीश सिंह, पिंकी भण्डारी, मनोज सिंह, लक्ष्मण सिंह, हरीश सिंह, अर्चना बिष्ट, मोहन सिंह, मोहित ढ़ौडियाल, संगीता, मंजू, जगत सिंह, संदीप सिंह आदि सभी बच्चे गैरसैंण क्षेत्र के ग्वाड, डागीधार, मैहलचोरी, सलियाणा, रिखोली, कालीमाटी, घंडियाल, छिनकुलाडि आदि दूर–दराज के बच्चों को देहरादून में चकराता रोड़ पर स्थित सुरभि पैलेस होटल में मीडिया का प्रशिक्षण दिया गया। इसमें इन्टरनेशनल प्लान से मीडिया समन्वय के0कनन0, रेडियों प्रोग्राम की प्रशिक्षक सीमा व गीता, कम्प्यूटर प्रशिक्षक नरेन्द्र देव, फोटोग्राफ प्रशिक्षक माधवन, कामिक्स प्रशिक्षक लखेन्द्र आदि प्रशिक्षकों द्वारा बच्चों को कहानी, कॉमिक्स, न्यूज, फोटोग्राफी, रेडियों प्रोग्राम का विशेष प्रशिक्षण दिया गया। कार्यशाला के पॉचवे दिन मीडिया के लोगों के सामने सभी बच्चों द्वारा प्रस्तुतीकरण किया गया। 1 तारीक को जब यें बच्चे देहरादून से वापस आये तो सभी के मन में उमंग की लहर दौड़ रही थी। इन थोड़े से दिनों में बच्चों ने मीडिया के काफी गुणों को सीखा जिसे सभी बच्चों ने अपने क्षेत्र की समस्याओं व उपलब्धियों को उजागर करने में उपयोग किया। बच्चों ने न्यूज, रेडियों, फोटोग्राफी, कॉमिक्स बनाकर उमंग राज्य समन्वय गजेन्द्र नौटियाल को दिया और उन्होने इसे दिल्ली चिल्ड्रन प्रेस सर्विस बुलेटिन में प्रसारित करने के लिए दिया।

बच्चों ने 10 से 22 जून 2006 को प्रशिक्षक धीरज कुमार, एन्थनी व रमेश पुरोहित ने वीडियों न्यूज में 10 कोर उमंग के बच्चों को प्रशिक्षण दिया। जिसमें उन्होंने वीडियो एडिटिग एवं किस तरह से शार्ट लेते हैं और किस तरह से टीवी के लिए न्यूज का पी0टू0सी0 तैयार करते हैं इस विषय की

पूर्ण जानकारी दी बच्चों के द्वारा वीडियो के लिए एक–एक प्रोग्राम तैयार किये गये।

9 सितम्बर को अर्चना एवं लक्ष्मण ने जनेवा में अपने द्वारा किये गये कार्यो का विवरण दुनिया के सामने रखा। अपनी बात को रखने के बाद 21 सितम्बर को वापस आये और उमंग पर चार चॉद लगा दिये।

इन माध्यमों को सीखने के बाद कोर उमंग के द्वारा गैरसैण क्षेत्र के 25 बच्चों को मीडिया के सभी माध्यमों की पूर्ण जानकारी दी गयी। इन्टर नेशनल प्लान दिल्ली से आयी नन्दा समन्वयक तनुश्री दत्ता के द्वारा उमंग द्वारा अपने क्षेत्र के बच्चों को दिया गया प्रशिक्षण सराहा गया। 1 से 2 अक्टूबर को लेखन का प्रशिक्षण तरुण बोस, डीजिटल स्टोरी का प्रशिक्षण मदन, वीडियो न्यूज कर प्रशिक्षण नित्या के द्वारा दिया गया। इसी बीच कोर उमंग में कार्य कर रहे बच्चों को ऐसा मौका मिला जिसके माध्यम से बच्चे अपनी बात को जनता के सामने रखने में सक्षम हुए।

इसी प्रशिक्षण में तरुण बोस द्वारा अखबार निकालने पर चर्चा एवं अखबार में कार्य करने वाले सभी का बच्चों का चयन किया गया। गैरसैंण के बच्चों ने कई सालो से जो ख्वाब संजो रखे थे कि एक दिन हमारा भी अपना अखबार होगा वह 1 नवम्बर 2006 को हकीकत में बदल गया तत्पश्चात हर महिने बच्चों का उमंग अखबार निकलने लगा। बच्चों द्वारा अपने क्षेत्र की दशाओं अखबार में प्रस्तुत करने के बाद गॉव के अन्य बच्चे भी पहल करने लगे। इसके साथ ही उमंग ग्रुप के गैरसैंण के 35 गॉवों में रेडियो नेरोकॉस्टिंग कामिक्स एवं गॉव की समस्याओं पर आधारित फोटोग्राफ की प्रदर्शनी लगायी गयी। नेरोकॉस्टिंग के द्वारा गांव के लोगों के सामने गांव की समस्याओं तथा कई कुरितीयों पर रेडियो कार्यक्रम सुनाये गये जिससे लोगों को समाज में हो रही घटनाओं व समस्याओं के बारे में पता चल सकें।

गांव के लोगों को साथ ही समस्याओं से निपटने तथा बचने के उपायों के बारे में जानकारी दी गयी। 21 जनवरी को कोर उमंग के सदस्यों द्वारा देहरादून में विभिन्न जिलों से आये पत्रकारों के साथ बात की गयी। जिसमें उमंग ग्रुप के सदस्यो ने अपनी बात को रखते हुए कहा कि उनकी कहानी, न्यूज एवं फीचर लेखों को बड़े स्तर के अखवारों (जो सभी जगह के लोगों तक पहुॅचता है) में स्थान मिलना चाहिए जिससे बच्चों की बाते उनके अधिकार प्रत्येक व्यक्ति जान सके इस पर सभी पत्रकारों ने सहमती जताते हुए उमंग सदस्यों की बात को स्वीकार किया।

कोर उमंग ग्रुप के चार सदस्यों द्वारा सर्वप्रथम 25 नवम्बर को देहरादून में 13 जिलों से आये 45 बच्चों को मीडिया का प्रशिक्षण दिया गया। कार्यक्रम के संचालक के0 कनन ने इस प्रशिक्षण को देखकर उमंग ग्रुप के सदस्यो का बाहरी राज्यों में भी इस तरह के कार्यक्रम आयोजित करने का निश्चय किया गया। इसके पश्चात मीडिया ग्रुप गैरसैंण के द्वारा राजस्थान (उरमूल सेतू संस्था) एवं महराज गंज (नौतनवां) में मीडिया स्किल कार्यशाला का आयोजन किया गया। जून माह में उमंग ग्रुप के 16 सदस्यों द्वारा में 7 जिलों (अल्मौडा, पिथौरागढ़, नैनीताल, उधम सिंह नगर, चम्पावत, बागेश्वर एवं रूद्रप्रयाग) के 175 बच्चों को मीड़िया का प्रशिक्षण दिया गया एवं सितम्बर में अन्य 6 जिलों (हरिद्वार, देहरादून, पौड़ी, उतरकाशी, टिहरी एवं चमोली) के 150 बच्चों को मीड़िया के गुण सिखाये। कोर उमंग मीडिया ग्रुप के द्वारा सभी जिलों से मिले न्यूज, कॉमिक्स, स्टोरी एवं रेडियो कार्यक्रमो को अखबार (पत्रिकाओं) के द्वारा तथा केवल नेटवर्क के द्वारा लोगों के सम्मुख प्रस्तुत किया गया।

वर्तमान में कोर उमंग ग्रुप के द्वारा विभिन्न जिलों के बच्चों की न्यूज, कहानी एवं फीचर लेखों को एडिटिंग करके अखवार निकाला जा रहा है, बच्चों के द्वारा तैयार किये रेडियों कार्यक्रमों को सुधार कर एडिटिंग की जाती है एवं समय–समय पर ग्रुप के द्वारा विभिन्न जिलों के वरिष्ट पत्रकारों से व बाल पत्रकारों से चर्चाएं की जाती हैं। 14 अक्टूवर को पर्वतीय पत्रकार एसोसियशन संगठन के पत्रकारों की उमंग ग्रुप से चर्चा हुई, जिसमें एसोसियन संगठन ने उमंग ग्रुप को संगठन के सदस्यों

के रुप में चयनित किया।

उमंग ग्रुप का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण लोगों तक सूचनाओं का आदान–प्रदान करना तथा सभी जगहों पर बाल पत्रकारों को मानसिक तथा शाररिक रुप से इस लायक बनाना कि वह अपने क्षेत्र या समाज के लिए खुद लड़ सकें। बाल पत्रकारों को वे सभी तकनीकियाँ सिखाना जिसके द्वारा वे अपने हर समस्या का निवारण अपने द्वारा कर सकें साथ ही वे अपने समाज को पूर्ण रुप से विकसित कर सकें। बाल पत्रकारों को मीडिया की वे सभी क्रियाएं सीखाई जाय जिसे वे अपने हित तथा समाज के हित के लिए प्रयोग कर सकें। इन तकनीकियों को सीखने के बाद वे अपने गांव या क्षेत्र की छोटी से छोटी तथा बड़ी से बड़ी समस्याओं को पूरी जानकारी के साथ लोगों के सामने रख सकते है।

बरसात के किचड़ से निजात पाया छात्रों ने !

15 वर्षीय लेखिका करिश्मा जुयाल पौडी जिले के सुमेरपुर गॉव की रहने वाली है।

गंगवाडस्यू पट्टी में एक गॉव सुमेरपुर है। इस गॉव में 25 परिवार रहते हैं। इस गॉव का बाजार ल्वाली है। जो कि गॉव से 2 किमी0 दूर है। इस गॉव के आने–जाने वाले रास्तों में मिट्टी है तथा कुछ रास्ते सीमेंट के बने हैं। बरसात के समय सभी जगह पानी रहता है। वर्षा का पानी रास्तों में आ जाता था, जिससे रास्तो में काई जम जाती और फिसलन हो जाती थी। जिन रास्तो में मिट्टी रहती थी वहॉ किचड़ जमा हो जाता था। जब स्कूली बच्चे विद्यालय के लिए निकलते तो सारे कपड़ो पर किचड़ का दाग (धब्बे) लग जाते थे। रास्तो में काई व फिसलन के कारण बच्चे फिसल जाते थे और उनके हाथ पैर पर में चोट लग जाती थी। बरसात के समय बच्चो को कई दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। उन्हे रोज अपने कपड़ो का धोना पड़ता था।

बच्चों ने आई0डी0एस0 कार्यकर्ता मधु जुयाल से कहा और उसके बाद उन्होंने गॉव में बाल पंचायत का गठन किया। इन कठिनाईयो से मुक्त होने के लिए बाल पंचायत के सदस्यों ने मिल जुलकर रास्तो की सफाई की और रास्तों में आने वाले पानी से निजात पाने के लिए नालियॉ बनाई। आज बच्चे खुशी–खुशी विद्यालय जाते हैं। अपनी कठिनाईयो को सुलझाकर उन्होने निर्णय लिया कि जहॉ भी कोई झाड़ी उगेगी या किसी भी रास्तों में पानी आयेगा वहॉ पानी के लिए नालियॉ बनायी जाएगी।

बाल अधिकार पर की गयी खुल कर चर्चा

दीपक साह

कोर उमंग मीडिया ग्रुप गैरसैंण के द्वारा 13 जिलों से आये 48 बाल पत्रकारों से बाल अधिकारों पर खुल कर बातचीत की गयी। जिसमें बच्चों के अधिकार तथा बच्चों विकास पर बात की गयी और चर्चा की गयी कि बच्चा कौन है...? बच्चा कैसे बड़ा होता है...? बच्चे के बड़े होने में कौन–कौन सहायक होते हैं। कार्यक्रम का संचालन उमंग समन्वयक गजेन्द्र नौटियाल और आर0ओ0सी0 समन्वयक राजेन्द्र जोशी के द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अमर उजाला पत्रकार पुरुषोतम असनौड़ा ने किया। 28 सितम्बर से 29 सितम्बर तक चली इस कार्यशाला में बाल पत्रकारों ने लेखन, कॉमिक्स और नुकड़ नाटको के द्वारा बाल अधिकारो पर बातचीत की। दो दिन तक चल रही कार्यशाला में एस0बी0एम0ए0 के परियोजना प्रबन्धक सुरेश बलोदी ने भी प्रतिभाग किया।

उत्तरॉचल के 13 जिलो के चयनित उमंग बाल पत्रकारों ने प्रतिभाग किया। कार्यशाला में बच्चों ने चार ग्रुपो में अपनी–अपनी समझ को एक–दूसरे के सम्मुख रखा साथ ही बच्चो के साथ कार्य कर रहे कार्यकर्ताओ को भी दो ग्रुपों में विभाजित किया गया। सभी ग्रुपो को बच्चों के विषय पर कुछ प्रश्न दिये गये। सभी के द्वारा अलग–अलग तरह की बाते प्रस्तुतिकरण के बाद सामने आयी।

प्रशिक्षण में आयी करिश्मा, मोनिका, दीपक सैनी और गौरव ने कहा कि संविधान के अनुसार बच्चा वह है जिसकी उम्र 0 से 18 वर्ष के बीच हो, लेकिन उनकी समझ के अनुसार बच्चा वह है जो पैदा होने से 16 या 18 वर्ष तक अपने माता–पिता पर निर्भर रहता हैं तथा बच्चे का मानसिक विकास धीरे–धीरे पूर्ण होता है।

कार्यशाला के दौरान बच्चों ने नुक्कड़–नाटक के द्वारा भी अपनी बात को प्रस्तुत किया गया। जिसमें ग्रुपो ने बच्चो की दयनीय स्थिति पर भी प्रकाश डाला कि गांव में बच्चा किस प्रकार से जीवन यापन करता है और इससे उसके दिमाग पर क्या अस़र पड़ता है।

कार्यक्रम संचालक गजेन्द्र नौटियाल ने कहा कि इस तरह के कार्यक्रमों के द्वारा बच्चे गांव के माहौल से हट कर बाहर के अन्य साथियों से मिलते है जिसमें वे अपनी समस्याओं का आदान–प्रदान करते है। इस प्रकार के कार्यक्रमों के आयोजन से बच्चा बोलना व अपनी बात को अन्य दूसरे के सम्मुख सही प्रकार से रख पाते हैं। बच्चों के आपसी बातचीत के दौरान कई नयी बातें सुनने को मिलती है तथा उनके अनुभवो से कार्यक्रमों को बेहतर बनाने में सहायता मिलती है।

उमंग कार्यक्रम के द्वारा सभी जिलों में प्रशिक्षण भी दिये गये जिसमें उन्हें मीडिया के कई माध्यमों को भी सीखाएं गये हैं। जिसका प्रयोग वे अपनी समस्या के निवारण के लिए करते है और सूचनाओं के आदान–प्रदान करने के लिए करते है। बाल अधिकार समन्वयक राजेन्द्र जोशी का कहना है कि बच्चों को अभी भी अपने पूर्ण अधिकार नही मिल पाते। जोशी जी ने उदाहरणो से बाल अधिकारो के हनन पर चर्चा की कि किस प्रकार से बच्चों के अधिकारो का हनन होता है। उन्होने बाल अधिकार समझौते पर बताया कि 1989 के बाल अधिकार समझौते में अनुछेद 12 व 13 के अनुसार बच्चे अपने जीवन से जुडे सभी मुद्‌दो पर और जिम्मेदार लोगो तक अपने विचार व्यक्त कर सकते है। जो बच्चे के विकास में आगे बढ़ने को प्रेरित करता है।

दो दिनों तक चली कार्यशाला में सभी ने कार्यशाला के सभी मुद्‌दो पर गहनता पूर्वक विचार किये और बच्चे के बड़े होने में अपनी–अपनी राय सामने रखते हुए कहा कि बच्चे के बड़े होने में सबसे महत्व पूर्ण स्थान माता–पिता, समाज और शिक्षको का होता है। सभी के विचारो को सुनते हुए अंत में परियोजना प्रबन्धक ने अपनी बात को रखते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

अपनों को अपनों से ही धोखा

18 वर्षीय गिरीश सिंह चम्पावत जिले के तामली गॉव का रहने वाला है।

तामली क्षेत्र के सुमेरपुर गॉव में मोहन नाम का एक लड़का रहता है। जब वह 14 वर्ष का था, तो उसके माता–पिता उसको लेकर घूमने पहाड़ पर गये थे। अचानक पहाड़ ढह जाने से उसके मॉ–बाप भी पहाड़ की चपेट में आ गये। उस समय मोहन गेंद लेने के लिए गया हुआ था। जब वह अपनी गेंद को लेकर वापस लौटा तो उसके मॉ–बाप पहाड़ के नीचे दब चुके थे। इससे मोहन को गहरा सदमा पहुँचा। तब उसके चाचा–चाची ने मोहन को आश्रय दिया।

मोहन के चाचा उसे प्रेम करते थे तथा चाची उसे फटी ऑख न सुहाती थी। मोहन का चचेरा भाई रंजन भी हर समय उसे किसी ने किसी तरह से परेशान करता था। वह कभी मोहन से अपने जूते साफ करवाता तो कभी रंजन के स्कूल का सारा काम मोहन ही करता। यहॉ तक की रंजन मोहन को स्कूल में भी मारता रहता है। मोहन की चाची उससे झाडु लगवाती, वर्तन साफ, कपडे धुलवाती इतना सब कुछ करने के बावजूद भी मोहन को हमेशा चाची की डाट सुननी पड़ती है। मोहन के चाचा ब्यवहार के बहुत अच्छे हैं। पत्नी की बातों से वे भी डर जाते और उसके विपक्ष में कुछ नहीं कहते। मोहन आज भी चाची की डाट से परेशान है। चाची की डाट सुबह'–सुबह मोहन के लिए प्रसाद बन चुका है। यह बरबस उसकी ऑखो में नजर आती है।

पढ़ाई से वंचित रह गया छोटू

लेखिका नौ वर्षीय प्रतिभा डबराल टिहरी जिले के कैथोली गॉव की रहने वाली है।

कराश नामक स्थान पर 12 वर्षीय छोटू नाम का एक अनाथ बालक रहता है। छोटू जब आठ वर्ष का था तब ही उसके सिर से मॉ–बाप का साया हट गया। मॉ–बाप की मृत्यु के बाद छोटू को सहारा देने वाला कोई नहीं रहा क्योंकि छोटू के मॉ–बाप कराश गॉव में अकेले ही मेहनत–मज़दूरी करके अपना गुजारा करते तथा छोटू को स्कूल पढ़ाते थे।

पर अब छोटू क्या करता! ऐसी स्थिति में छोटू को भरपेट खाना भी नहीं मिलता था और उसका स्कूल जाना भी बन्द हो गया क्योंकि उसको स्कूल भेजने वाला कोई नहीं था व न हीं उसके पास किताबें, फींस एवं न स्कूल ड्रेस थी। इन परिस्थितियों से जूझने के बाद छोटू के पास एक ही रास्ता बचा था। वह दिन भर भीक मॉगता और उससे अपना पेट भरता। भीक मांगने पर भी अगर कुछ न मिले तो वह भूखा ही सो जाता था। छोटू के पास रहने के लिए मकान भी नहीं था, सड़क पर ही उसका बसेरा था। अगर कोई व्यक्ति उसे अपने घर ले जाता वह छोटू से अपने घर का पूरा काम (बर्तन धोना, घास काटना) करवाते और काम कराने के बाद कभी एक रुपये देते तो कभी पेट भर भोजन भी न देते थे। उसकी ऐसी दशा देखकर किसी को भी दया नहीं आती थी। जब कोई काम करने के बदले एक रुपये देते तो छोटू उससे खाने के लिए बन्द ले लेता और उसी से अपना पेट भरता। छोटू को लोग कहते इधर आ कूड़ा गड्डे में डाल करके हम तुम्हे एक रुपये देगे लेकिन छोटू को टालकर और कामों पर लगा देते थे बस यहीं जिन्दगी है छोटू की।

एक बार फिर मेहनत रंग लाई

प्रतिभा डबराल कैथोली गॉव में निवास करने वाली नौ वर्षीय बच्ची है जो इस समय छठवीं कक्षा में पढ़ती है। इस उम्र में प्रतिभा ने अपने दोस्तों की समस्याओं को देखा, सुना, समझा उसके बाद उनकी मेहनत को कहानी के माध्यम से अपनी लेखनी बनाई।

टिहरी जिले में एक खडोगी नामक स्थान है। वहॉ पर बड़ी–बड़ी ऑखो वाली नौ वर्षीय स्वाती निवास करती है। वह इस समय तीन में पढ़ती है। उसके घर में बाप विश्वनाथ और मॉ मालती एवं दो भाई गोपाल व रोहित हैं।

जब स्वाती दूसरी कक्षा में पढ़ती थी तो वह स्कूल जाते समय आधे रास्ते में छिप जाती थी। मॉ–बाप स्वाती को स्कूल जाते देखकर खुश होते कि हमारी बेटी अपनी स्कूल में प्रथम आती है। स्वाती रोज की तरह अपने दोस्तों के साथ स्कूल जाती परन्तु उसके दोस्त स्कूल जाते वक्त आधे रास्ते में छिप जाते और उसे भी स्कूल जाने के लिए मना करते। फिर तो क्या था! सभी दोस्त छिप जाते। अब परीक्षा का समय भी आ चुका था। स्वाती परीक्षा के समय पर भी स्कूल नहीं जाती और आधे रास्ते में छिप जाती। जब स्वाती परीक्षा में फैल हुई तो यह बात उसके मॉ–बाप को मालूम हुई यह मालूम होने पर स्वाती के मॉ–बाप दोनों उसकी स्कूल की तरफ चल दिये। इतने में उन्होने स्वाती को छिपा देखकर उसे डाटा। स्वाती के पिता ने कहा, "बेटी अगर तुमने पढ़ना है तो हम तुम्हे तब स्कूल भेजते हैं नहीं तो घर में काम करोगी"। गुरुजी ने भी स्वाती की शिकायत उसकी मॉ–बाप से की। स्वाती जब अपनी कक्षा में जाती तो गुरुजी भी उसे कहने लगे कि स्वाती तुम पहले की तरह कक्षा में प्रथम श्रेणी में पास नहीं हो सकती और आओगी भी कैसे तुम तो आधे रास्ते में छिप जाती हैं। इस बात को सुनकर स्वाती रोने लगी और स्वाती ने ठान लिया की मैं अपनी कक्षा में प्रथम आऊगी। अब स्वाती हर रोज स्कूल जाती है और खूब मेहनत करती व आज भी पहले की तरह अपनी कक्षा में प्रथम आती है।

शराब ने मचाई घर की तबाही

15 वर्षीय देवेन्द्र रावत पौड़ी जिले के उज्याड़ी गॉव का है।

उज्याड़ी गॉव में 250 परिवार निवास करते हैं। उनमें से एक परिवार गबर सिंह का भी था। वह अपनी पत्नी रामेश्वरी व तीन बेटियॉ अनीता, लक्ष्मी, संगीता के साथ मेहनत मजदूरी करके जीवन यापन करता था। गबर मजदूरी करके जो भी कमाता उसे शराब में उड़ा देता। रोज रात को शराब पीकर घर आना गबर की रोजाना की आदत बन गयी।

आज भी रोज की तरह गबर शराब पीकर घर आ रहा था तो रास्ते में उसका पॉव फिसला और वह जोर से नीचे गिर गया। गिरने से उसके सर पर चोट लग गई व बेहोश हो गया। बाजार से अपने घर उज्याड़ी जा रहे दो आदमियों ने जब गबर सिंह को बेहोशी की हालत में देखकर तो उन्होने गबर सिंह को तुरन्त अस्पताल ले गये। उनके घर वालों को इस बात का पता चला तो वे तुरन्त अस्पताल पहुॅच गये। डाक्टर ने उसके घर वालो को बताया कि अधिक शराब पीने से गबर सिंह की किड़नी खराब हो गयी। घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण गबर सिंह का इलाज न हो पाया और वह इस दुनिया से हमेशा–हमेशा के लिए चला गया। उसके घर वालो पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा और उसकी पत्नी, बच्चों को दर–दर की ठोकरे खानी पड़ी।

कैसा होगा अन्त

लेखिका 16 वर्षीय रचना राणा रूद्रप्रयाग जिले के कपणियॅा गॉव की रहने वाली है।

मैं आज भी उस दिन को याद कर झूम उठती हूॅ जब मैं जवाहर नवोदय विद्यालय रूद्रप्रयाग में अपने माता–पिता के साथ प्रवेश के लिए गयी थी। यह एक आवासीय विद्यालय है। यहीं मेरी मुलाकात एक परी जैसी लड़की से हुई थी। वह छोटी सी काली–काली ऑखो वाली, घुॅघराले बालों वाली बर्फ जैसी सफेद कोमल नाम की वह लड़की मेरी दोस्त बन गयी। दोनों घर से बाहर थे अतः हम दोनों में खूब बनती जब हम दोनों साथ रहते तो घर की याद भी नहीं आती थी। एक दिन जब में शाम को खेल रही थी तो मैनें देखा कोमल एक जगह चुपचाप हो कर बैठी थी। पास जाकर पूछना चाहा तो वह रोने लगी। मैंने उसके पास बैठी एक लड़की से पूछा तो उसने बताया कि किसी ने कोमल को कुछ कह दिया इसलिए वह चुपचाप उदास होकर बैठ गयी। तभी हमारे शाम की घंटी बज गयी और हम वहॉ से चल दिये।

रात के समय पर मैंने कोमल से पूछा तो उसने बताया कि तुम्हे पता नहीं मेरी मॉ अपना और मेरा भरण–पोषण कैसे करती है। कोमल ने आगे बताया कि जब वह 8 वर्ष की थी तब वह वह ममनी गॉव में अपनी माता बैशाखी देवी व पिता आनन्द सिंह (काल्पनिक नाम) दादा–दादी के साथ सुख पूर्वक जीवन यापन कर रही थी। दादी और मॉ मे अक्षर बातों–बातों में लड़ाई हो जाती थी। मॉ के प्रति दादी की नफरत बढ़ती ही जा रही थी। अतः मॉ से बदला निकालने के लिए दादी ने पिताजी को मॉ के विरुद्व कर दिया और पिताजी की दूसरी शादी करवा दी।उसके पिताजी निष्ठुर निकले की वे कोमल और उसकी मॉ को पूरी तरह से भूल गये। दादी ने भी कोमल और उसकी मॉ को घर से निकाल दिया। बैशाखी देवी कोमल को लेकर गॉव के किसी टूटे मकान में रहने लगी। फिर भी बैशाखी ने हार नहीं मानी और वह कुछ दिनों बाद कोमल को लेकर उसके पिताजी के पास देहरादून चली गयी। जब बैशाखी देहरादून पहुॅची तो कोमल की दूसरी मॉ उन्हें देख कर हैरान हो गयी। क्योंकि उसको शादी से पहले बताया गया था कि कोमल की मॉ गॅूगी और पागल है। यह देख कोमल की दूसरी मॉ आनन्द पर चिल्लाने लगी कि तुमने मुझे धोखा दिया है। या तो इसे तलाक दो या फिर मैं ही अपने मायके चली जाती हूॅ। यह सुन कर कोमल के पिता ने कोमल की दूसरी मॉ को समझाया और तलाक के कागज बैशाखी को हस्ताक्षर करने को दे दिये। जब उनका तलाक हुआ तो अदालत ने यह फैसला सुनाया कि आनन्द सिंह कोमल की मॉ बैशाखी को महिने

के 500 रू देंगें। लेकिन यह रकम तो उनके लिए बहुत कम थी क्योंकि कोमल की पढ़ाई और घर का खर्चा चलाना था। कोमल की मॉ ने खेती के काम के अलावा भैस का दूध बिकाना भी शुरू किया और कोमल को अच्छे स्कूल में दाखिला दिलाया। कोमल जैसे–जैसे बड़ी होती गयी अपने पापा के प्रति उसके मन में नफरत भी बढ़ने लगी। वह अपने पिता के लाये तोहफों कों भी स्वीकार नहीं करती थी पापा के पास जाकर बैठना भी उसके नन्हें से दिल को मंजूर न था।

परन्तु आज कोमल 15 वर्ष की हो चुकी कक्षा 10 वीं की छात्रा है। कोमल के विचार और सोच बदल चुकी है वह सोचती है कि वह अपने पिता व सौतेली मॉ को मनाकर उस टूटे हुए रिस्तों की डोरी को फिर से बॉध कर अपने परिवार को एक छत के नीचे रहने के लिए मजबूर कर देगी। और उसकी यह कोशिश कामयाब होती नजर आ रही है क्योंकि जब भी कोमल के पिता घर आते हैं तो कोमल एवं उसकी मा के लिए तोहफे लाते है कोमल की मॉ भी कोमल के पिता से कोई शिकायत नहीं करती है।

बहादूरी की मिशाल : पूजा

16 वर्षीय ज्योति जोशी अल्मोड़ा जिले के सोमेश्वर गॉव की रहने वाली है ।

कोशानी क्षेत्र के कॉटली गॉव में चम्पा देवी का खुशहाल परिवार रहता था। चम्पा देवी के दो बच्चे 6 वर्षीय पूजा व ड़ेढ़ वषीय नीरज हैं। चम्पा का घर धन–धान्य से परिपूर्ण था। चम्पा के घर को धन से पूर्ण देखकर कॉटली गॉव के ही मोहन सिंह ने चम्पा का घर बर्बाद करने की सोच ली। चम्पा का घर अकेले में गॉव से आधा किलोमी0 दूर था अतःमोहन को यह मौका जल्दी ही मिल गया। 11 मई 2006 को मोहन सिंह ठीक 11 बजे रात को खिड़की के रास्ते हाथ में चाकू लिए चम्पा के घर में घुस गया। उस समय चम्पा और उसके दोनों बच्चे गहरी नींद में सोये थे। कुछ देर बाद उन्हें घर में किसी के चलने का अहसास हुआ चम्पा बच्चों सहित जाग उठी उन्होंने देखा तो उनके सामने मोहन सिंह चाकू लिए खड़ा था।

मोहन सिंह ने चम्पा देवी से उसके जेवर और रूपये मांगे लेकिन चम्पा देवी ने देने से इन्कार कर दिया। चम्पा और मोहन के विवाद के दौरान चम्पा की बड़ी बेटी पूजा अपने छोटे भाई को लेकर चारपाई के नीचे छुप गई। मोहन को रूपये और जेवर न मिलने पर उसने चम्पा देवी को चाकू से मार दिया जिससे चम्पा देवी की मौंत हो गई मोहन सिंह घर में जेवर और पैंसे ढूढ़ने लगा तभी चम्पा की बेटी पूजा ने अपने भाई नीरज को पीठ में बॉधकर खिड़की के रास्ते छलांग लगा दी एवं मोहन के चंगुल से बच निकली। मोहन ने भी सारे जेवर व पैसे निकालकर चप्पा के घर में आग लगा दी और वहॉ से चम्पत हो गया।

दूसरे दिन जब गॉववासियों को घबराई हुई पूजा द्वारा जब इस बात का पता चला तो गॉव के लोगों द्वारा पुलिस कार्यवाही की गई और मोहन पकड़ा गया एवं अदालत ने उसे उम्रकैद की सजा दी। पूजा के इस साहसिक कार्य को देखकर भारत सरकार ने 26 जनवरी 2007 कों राष्ट्रपति ए0 पी0जे0 अब्दुल क्लाम के द्वारा पूजा को वीरता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पिता के द्वारा छोड़ दिये जाने पर इन असहाय बच्चों की देख–रेख भारत सरकार द्वारा की जाती है।

जंक खाते प्राथमिक विद्यालयों के कम्प्यूटर

गरूड़ (बागेश्वर) सुन्दरनाथ

प्राथमिक विद्यालय पिंगलो में सरकार द्वारा कम्प्यूटर तो दिये गये है परन्तु कम्प्यूटर कक्षाऐं चलाने के लिए कोई टीचर नहीं आज भी बन्द कमरों में जंग खाते पड़े है यें कम्प्यूटर।

प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य ने कहा कि 250 की संख्या में यहॉ पर बच्चे पढते हैं पर यहॉ तीन अध्यापक हैं और सरकार ने कम्प्यूटर मुहैया कराये हैं। इस कम्प्यूटर कक्षा चलाने के लिए

यहाॅ पर किसी भी अध्यापक का चयन नहीं किया है जिससे कम्प्यूटर कक्ष भी बन्द एवं जंग खाते नजर आ रहे हैं।

उन्होंने आगे कहा कि बच्चों ने कम्प्यूटर कक्ष को चलाने के लिए अध्यापको के प्रति आवाज उठायी। जिससे अध्यापको के लिए कम्प्यूटर कक्ष मजबूरी में खोलना पड़ा ।

बच्चों का कहना है कि जब से हमने रैली निकाली तब से हमें कम्प्यूटर की क्लास सीखने को मिल रहा है।

लड़कियों को उपेक्षित क्यों ?

मोनिका

कल्याणपुर मे हरि का एक परिवार रहता है। उसके परिवार में पत्नी गीता और चार बच्चे विमला, राधा, राजू व मीरा रहते थे। वे अपनी लड़कियों की तुलना में अपने लड़के को अधिक महत्व देते थें। उन्होने अपने लाड प्यार से राजू को बिगाड़ दिया। अपनी दो बड़ी बेटियों को उन्होने दसवीं तक ही पढाया। हरि ने सोचा कि पढ़ाने से अच्छा है मैं अपनी दोनों बड़ी बेटियों की शादी अच्छे घर में कर दूॅं। तब अगले ही दिन हरि के घर में लड़कियों की मंगनी वाले आते हैं और वह एक–एक कर दोनों की मंगनी करके उनकी शादी कर देता है। हरि अपने बेटे राजू को स्कूल भेजते थे, किन्तु अपनी छोटी बेटी मीरा की पढ़ाई में रुचि देखकर उसने मीरा को भी राजू के साथ स्कूल भेज दिया। कुछ वर्षो बाद दोनों ने इण्टरमीडिएट की परीक्षा पास कर ली और हरि भी बच्चों के प्रति सोचने के लिए विवश हो गया। उसके बाद हरि ने अपने बच्चों को पढाने के लिए अपनी ज़मीन बेचकर उनको बाहरी स्कूलो में पढ़ाई के लिए भेज दिया। हरि ने अपने दोनों बच्चों को डॉक्टर एवं इंजीनियर का प्रशिक्षण दिलवाया और मीरा ने अपनी मेहनत, लगन से डॉक्टरी की परीक्षा पास कर। मीरा की नियुक्ति अपने ही गाॅव के स्वास्थ्य चिकित्सालय में हो गयी। समय बितता गया राजू कर प्रशिक्षण के वर्ष समाप्त हो गये, वह घर आया। राजू ने घर आकर अपने माता–पिता को बताया कि मैं इंजीनियर की परीक्षा फैल हो गया हूॅं। राजू माॅ–बाप पर आश्रित रहने लगा। उसको घर में रहकर जुए व शराब की आदत बन गई एवं उस पर जुए व शराब का कर्ज बढ़ता गया। अपने ऊपर बढ़ता कर्ज देखकर राजू ने माॅ–बाप की बची हुई ज़मीन बेचने का निश्चय कर लिया। जब गाॅव वालों को यह बात पता चली तो गाॅव के कुछ लोगों ने राजू को शराब पिलाकर उसकी ज़मीन अपने नाम करवा ली। यह देख राजू के माॅ–बाप के तो पैरों तले ज़मीन खिसक गयी। राजू अब पश्चाताप करने लगा। हरी और गीता ने भी अपनी गलतियों को महसूस किया कि उन्होंने अपनी बेटियों को बोझ समझकर उन्हें प्रताड़ित किया है। अब गीता और हरी अपनी बेटियों पर ही आस लगाये जी रहें हैं।

अपने अधिकारों की पहल– बाल पंचायत

दीपा झिंक्वाण

हमारे देश में आज भी अधिकारों को गम्भीरता से नहीं लिया जाता, जबकि बाल अधिकारों व उनसे जुड़े मुद्दों पर आज विश्वव्यापी बहस छिड़ी हुई है और इन्हें लेकर विश्व समुदाय चिंतित भी है। अपने अधिकारों को मांगने की पहल के उद्देश्य से उत्तराखण्ड के पहाड़ी इलाकों में कुछ बच्चों ने संगठन बनाए हैं। इन संगठनों को बाल पंचायत, बालसभा या बाल संगठन के नाम से जाना जाता है। ये संगठन ग्रामीण स्तर व ब्लॉक स्तर पर 5 से 17 साल के बच्चों की भागीदारी से बने हैं। इन संगठनों की माह अथवा पंद्रह दिन में एक बैठक होती है। बैठक के दौरान बच्चे अपने–अपने गाॅव/टोले की समस्याओं को रखते हैं। इसके बाद समस्याओं पर सामूहिक विमर्श किया जाता है व उससे निपटने के लिए रणनीति बनाई जाती है। बाल पंचायत के गठन में अध्यक्ष, उपाध्यक्ष,

सचिव, उपसचिव, कोषाध्यक्ष, उपकोषाध्यक्ष, सांस्कृतिक सचिव, खेल सचिव तथा मंत्री का चुनाव कर उन्हें संबंधित दायित्व सौंपे जाते हैं जिनका कि वे निर्वहिन करते हैं।

बाल पंचायतों द्वारा ग्रामीणों को विभिन्न विषयों के प्रति जागरुक करने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम व अन्य गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। बाल पंचायत की बैठक में होने वाली कार्यवाही को औपचारिक रुप से रजिस्टर में लिखा जाता है। बाल पंचायतों के अपने सचिवालय हैं। उत्तराखण्ड के चमोली ज़िले के अन्तर्गत आने वाले गैरसैंण क्षेत्र के 232 गाँवों में 173 बाल पंचायत सक्रिय रुप काम कर रही है। इन गांवों में मुख्य रुप से गैरसैंण, धारगैड़, गैड़, सिलंगी, पज्याणा, मटकोट, पँचाली, मूंसो, गांवली, डुग्री, कोठयार, रंगचौंणा, वसराखेत, हरसारी, कुनीगाड, मालकोट, सलियाणा आदि शामिल हैं। बाल पंचायतों द्वारा सफाई अभियान व वृक्षारोपण की गतिविधियों को गॉव के बड़े लोगों ने सराहा और साथ ही उसमें भागीदारी भी दर्ज कराई।

बाल पंचायतों के प्रतिनिधि गॉव व क्षेत्र से संबंधित समस्या को लेकर तुरंत सरकारी अधिकारियों के पास भी पहुँच जाते हैं। प्रत्येक बाल संगठन में लगभग 30 बच्चे हैं। बाल पंचायत से जुड़ें कुल बच्चों की संख्या पॉच हज़ार से अधिक है। बाल पंचायतों के गठन के बाद एक तरफ़ जहॉ बाल मज़दूरी के खिलाफ़ आवाज़ उठाई जा रही है वहीं स्कूल न जाने वाले बच्चों को स्कूल भेजने जैसी पहलों को भी अन्जाम दिया जा रहा है। यदि हाल ही में किये गए बाल पंचायतों के उल्लेखनीय कार्यो पर नज़र डालें तो ग्राम फरकन्डे की कुन्ती ने अपने गॉव में कई बच्चों को स्कूल भेजने का काम किया। पंचाली की बाल पंचायत ने स्थानीय एस डी एम के पास जाकर अपने गॉव की समस्या और बच्चों के जन्मपंजीकरण हेतु कार्ड की मांग कर सभी को कार्ड दिलवाये। इसके अतिरिक्त बाल पंचायतों ने क्षेत्र में कई ऐसे कार्य किए हैं जो गॉव व क्षेत्र के विकास में सहायक सिद्व हुए हैं। साथ ही बाल पंचायत को एक पहचान भी मिली है।।।

अपने अधिकारों की पहल– बाल पंचायत

दीपा झिंक्वाण

हमारे देश में आज भी अधिकारों को गम्भीरता से नहीं लिया जाता, जबकि बाल अधिकारों व उनसे जुड़े मुद्दों पर आज विश्वव्यापी बहस छिड़ी हुई है और इन्हें लेकर विश्व समुदाय चिंतित भी है। अपने अधिकारों को मांगने की पहल के उद्देश्य से उत्तराखण्ड के पहाड़ी इलाकों में कुछ बच्चों ने संगठन बनाए हैं। इन संगठनों को बाल पंचायत, बालसभा या बाल संगठन के नाम से जाना जाता है। ये संगठन ग्रामीण स्तर व ब्लॉक स्तर पर 5 से 17 साल के बच्चों की भागीदारी से बने हैं। इन संगठनों की माह अथवा पंद्रह दिन में एक बैठक होती है। बैठक के दौरान बच्चे अपने–अपने गॉव/टोले की समस्याओं को रखते हैं। इसके बाद समस्याओं पर सामूहिक विमर्श किया जाता है व उससे निपटने के लिए रणनीति बनाई जाती है। बाल पंचायत के गठन में अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, उपसचिव, कोषाध्यक्ष, उपकोषाध्यक्ष, सांस्कृतिक सचिव, खेल सचिव तथा मंत्री का चुनाव कर उन्हें संबंधित दायित्व सौंपे जाते हैं जिनका कि वे निर्वहिन करते हैं।

बाल पंचायतों द्वारा ग्रामीणों को विभिन्न विषयों के प्रति जागरुक करने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम व अन्य गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। बाल पंचायत की बैठक में होने वाली कार्यवाही को औपचारिक रुप से रजिस्टर में लिखा जाता है। बाल पंचायतों के अपने सचिवालय हैं। उत्तराखण्ड के चमोली ज़िले के अन्तर्गत आने वाले गैरसैंण क्षेत्र के 232 गांवो में 173 बाल पंचायत सक्रिय रुप काम कर रही है। इन गांवों में मुख्य रुप से गैरसैंण, धारगैड़, गैड़, सिलंगी, पज्याणा, मटकोट, पंचाली, मूंसो, गांवली, डुग्री, कोठयार, रंगचौंणा, विसराखेत, हरसारी, कुनीगाड, मालकोट, सलियाणा आदि शामिल हैं। बाल पंचायतों द्वारा सफाई अभियान व वृक्षारोपण की गतिविधियों को गॉव के बड़े लोगों ने सराहा और साथ ही उसमें भागीदारी भी दर्ज कराई।

बाल पंचायतों के प्रतिनिधि गॉव व क्षेत्र से संबंधित समस्या को लेकर तुरंत सरकारी अधिकारियों के

पास भी पहुँच जाते हैं। प्रत्येक बाल संगठन में लगभग 30 बच्चे हैं। बाल पंचायत से जुड़ें कुल बच्चों की संख्या पॉच हज़ार से अधिक है। बाल पंचायतों के गठन के बाद एक तरफ़ जहॉ बाल मज़दूरी के खिलाफ़ आवाज़ उठाई जा रही है वहीं स्कूल न जाने वाले बच्चों को स्कूल भेजने जैसी पहलों को भी अन्जाम दिया जा रहा है। यदि हाल ही में किये गए बाल पंचायतों के उल्लेखनीय कार्यो पर नज़र डालें तो ग्राम फरकन्डे की कुन्ती ने अपने गॉव में कई बच्चों को स्कूल भेजने का काम किया। पंचाली की बाल पंचायत ने स्थानीय एस डी एम के पास जाकर अपने गॉव की समस्या और बच्चों के जन्मपंजीकरण हेतु कार्ड की मांग कर सभी को कार्ड दिलवाये। इसके अतिरिक्त बाल पंचायतों ने क्षेत्र में कई ऐसे कार्य किए हैं जो गॉव व क्षेत्र के विकास में सहायक सिद्व हुए हैं। साथ ही बाल पंचायत को एक पहचान भी मिली है।

अभी भी हैं बच्चे अपने मूल–भूत अधिकारों से वंचित

कपिल सेमवाल, भटवाडी (उतरकाशी)

एक ओर जहॉ राज्य स्तर पर बाल विकास की की बात चर्चा में है वहीं उतरकाशी के भटवाड़ी ब्लाक में दूरस्थ बसे पिंगल व जौड़ाव के बच्चों को अपने मूल–भूत अधिकारों से अभी भी वंचित रहना पड़ रहा है। शिक्षा स्वास्थ्य सुरक्षा एवं सहभागिता जैसे अधिकारों के बिना किसी भी बच्चे का विकास सम्भव नहीं है।

सड़क मार्ग से 20 किमी0 की दूरी पर बसे पिंगल व जौड़ाव गॉव में बच्चों का शिक्षा स्तर काफी गिरा हुआ है इसका प्रमुख कारण सड़क का न होना एवं स्कूल का दूर होना बताया जा रहा है एवं यहॉ के लोगों की आर्थिक स्थिति भी ठीक नहीं है। इस क्षेत्र में काम कर रहे एस0बी0एम0ए0 के कार्यकर्ता शैलैन्द्र झल्डीयाल न यहॉ के बच्चों की शिक्षा के बारे में बताते हुए कहा है कि इन दोनों गॉव में मात्र दो बच्चे ग्रेजुएशन हैं एवं आठ लड़के 10 कक्षा तक ही पढ़े हैं जबकि लडकियों की स्थिति बहुत खराब है कुछ लड़कियॉ मात्र आठवीं तक ही पढ़ी हैं। गॉव में जूनियर हाईस्कूल है लेकिन वहॉ मात्र 26 बच्चे ही शिक्षारत हैं।

गॉव के ग्राम प्रधान का कहना है कि गॉव से स्कूल जंगल के रास्ते जाना पडता है जहॉ कि हर समय जंगली जानवरें का खौफ छाया रहता है तथा यहॉ की मिट्‌टी एसी है कि भू–स्खलन का डर भी मन को कचौडता रहता है पिछले महिने ही इस रास्ते पर स्कूल जाते हुए 19 वर्षीय राजू की भूस्खलन होने के कारण मौत हो गयी।

गॉव के बच्चों का कहना है कि जब से एस0बी0एम0ए0 के द्वारा गॉव में बाल पंचायत का गठन हुआ है उन्हें अपने अधिकारों की जानकारी मिल रही है नहीं तो इन बच्चों को अपने अधिकारों का पता भी नहीं था। बच्चों का कहना है कि इन्हें अभिभावकों का सहयोग नहीं मिलता है।

भारत इस्लामी आतंकवाद की प्रेत छाया में

अखिलेश रतूड़ी, गंगोरी (उतरकाशी)

हिन्दू और मुस्लिम दो अलग–अलग राष्ट्र हैं और हर गॉव गली में ये दो राष्ट्र एक–दूसरे का मुकाबला करते आयें हैं

पाकिस्तान का जन्म होते ही जिन्ना ने आई0एस0आई0 (इन्टर सर्विस एजेंन्सी) की स्थापना कर दी। 1965 मे पाकिस्तान ने भारत पर हमला किया लेकिन उसकी शर्मनाक हार हुई। इससे बॉखलाए हुए पाकिस्तान ने तय किया कि सीधे तो भारत से लड़ा नहीं जा सकता अतएव परोक्ष लड़ाई की दीर्घकालीन योजना बनाई गयी इसके लिए आई0एस0आई को फिर से सक्रिय किया गया। जनरल हमीद गुल इस काम की शुरूआत के लिए इसके अध्यक्ष बनाये गये। और इसका मुख्यालय इस्लामाबाद में बनाया गया।

आज आई0एस0टी0 के 25 हजार एजेण्ट हो गये हैं जो छह विभागों जाइण्ड, इन्टेलीजेंस एक्स, जाइन्ट काउन्टर इन्टेलीजेन्स ब्यूरो, जाइन्ट इन्टेलीजेन्स बॉर्थ, जाइन्ट इन्टेलीजेन्स मिसलेनियस, और जाइन्ट सिग्नल्स इन्टेलीजेन्स में बॅटकर काम कर रहे हैं। इस तन्त्र को चलाने का वर्ष भर का खर्चा 160 करोड़ है जिसे यह तन्त्र अफीम एवं अन्य नरकास्टिक की तस्करी करके जुटाता है। इस प्रकार आई एस आई का पुरा तन्त्र स्वक्तिपोषित है और पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था पर कोई अतिरिक्त बोझ नहीं डालता है।

भारत के इन्टेलीजेन्स ब्यूरो ने अपनी टाफप सिक्रेट रिपोर्ट में जानकारी दी है कि पाकिस्तान का सबसे बड़ा बैंक हबीब बैंक उतर प्रदेश, विहार और नेपाल में आई एजेण्ड़ो की मदत कर रहा है। उतर प्रदेश और नेपाल सीमा पर नियुक्त खुफिया विभाग का कहना है कि हमारे पास समुचित दस्तावेजी साक्ष्य है जो सिद्ध करते हैं कि हबीब बैंक नेपाल की मुसलिम संस्थाओं का संचालन कर रहा है और उतर प्रदेश के 100 से अधिक मदरसों को आर्थिक सहायता दे रहा है।

कारगिल युद्व के दौरान हबीब बैंक का बड़ा अधिकारी आजमगढ़ मउ, बहराईच गौण्डा, सिद्वार्थ नगर, गौरखपुर और महाराज गंज के दौरे बराबर करता था। खुफिया विभाग ने हबीब के इस बड़े अफसर की पहचान मोहमद अमसर के नाम से की है जो कि पाकिस्तान का नागरिक है।

हार से जीत

नवीन चौहान

एक बार मिली मुझको ऐसी असफलता।
मन ही मन में था जो मुझे खटकता।।
लोग कर रहे थे मेरी निन्दा।
सोचा मैने न रहूँ अब जिन्दा।।
मन ही मन में, मैं टूट गया था।
खुद से ही अब हार गया था।।
सहसा देखी मैंने एक छोटी सी घटना।
जिसने बदल दी मेरी सारी भावना ।।
एक चींटी थी, बढ़ रही ऑगन के कोनें में।
मैं उसे देखता रहा मन ही मन मैं।।
गिरती थी वह उठती थी।
फिर आगे बढ़ती थी।।
अन्त में वह छत पर बैठ गयी।
जीत का तोफा लेकर उड़ गयी।।
सहसा सोचा मैंने कुछ विचार करके।
मन ही मन में ध्यान करके।।
क्या एक हार ज़िन्दगी को बदल देती है।
क्या वह जीत की पहली सीढ़ी नहीं होती है।।
जीतने का था अब, मुझमें जो उत्साह।
फिरसे वह लौट गया।।
दिन–दिन की मेहनत से।

हार को जी में बदल रहा था।।
अन्त में मिली मुझको एक एसी जीत।
पूरे हो गये जिससे मन के सारे प्रीत।।
ऐसी सफलता तुम भी पाना भाई।
मेहनज से है जीवन सुखदाई।।

नवीन चौहान रूद्रप्रयाग जिले के जखोली गॉव का रहने वाला है।

क्योंकि औरत हूॅं मैं

सुशीला नेगी

मुझे सपने नहीं देखने दिए गए।
क्योकि मेरी पलके कभी झपकी नहीं।।
मेरी सुबह रात के अन्धेरे में हुई।
बस्ता नहीं थमाया गया मेरे बचपन को।।
मुझे सुबह सॅवारा नहीं गया।
मैंने अपने लहू से रचि यह दुनिया।।
मेरी कराह नहीं सुनी किसी ने।
जग सोया रहा–जग सोया रहा।।
मेरी पलकों को इंतजार था।
मुझमें अंनत कल्पनाएं थी।।
पर क्या करु अपूर्ण रही मेरी आकाक्षाएं।
मुझमें काली दुर्गा और सावित्री का वास था।।
पर होगा क्या अबला जीवन का।
मेरा जीवन चूल्हे के धुॅंए में घुटता रहा।।
क्योंकि मैं पत्नी हूॅं, मॉ हूॅं, औरत हूॅं।
मुझे सपने नहीं देखने दिए गए।।